International Journal of Applied Research 2016; 2(11): 563-564

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(11): 563-563
www.allresearchjournal.com
Received: 09-09-2016
Accepted: 16-10-2016

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

आदिम संस्कृति से प्रेरित आधुनिक कला के चितेरे

डॉ. सुशील निम्बार्क

प्रस्तावना

यह दृश्यमान जगत किसी अदृश्य शक्ति की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कलाकर इसी कलात्मक अभिव्यक्ति से प्रभावित और प्रेरित होकर कला रचना में प्रवृत होता है। प्रकृ ति में बिखरे विविध रंग उसकी रंगचेतना को जगाते हैं। पर्वत, नदी, वृक्ष झरने आदि उसके मन में आकृतियों को साकार करने में सहायक होते हैं। यह उत्तर आधुनिक युग है– कम्प्यूटर, इन्टरनेट, डिजीटल फोटोग्राफी आदि आधुनिकतम उपादान का प्रयोग जीवन की अन्य अभिव्यक्तियों की तरह कला रचना को भी प्रभावित कर रहा है। ऐसा होते हुए भी आधुनिक कलाकार का मन आदिम जन जीवन की गहराइयों को फलक पर उतारता है। शायद आदिम जनजातियों के जीवन के उद्दाम आवेग के प्रति प्रकृत जीवन शैली के प्रति वह आकर्षण का अनुभव करता हो। यूरोप में अनेक उत्तर प्रभाववादी चित्रकार इस बात का प्रमाण हैं, इन चित्रकारों ने आदिम जन–जीवन को अपनी चित्रकला का विषय बनाया है। पॉल गोंग्व ने अपना संपूर्ण जीवन आदिवासियों के बीच बिताया, उनकी संस्कृति को आत्मसात किया ढेरों चित्र बनाए. एक इतिहास ही रच दिया।

विश्व के महान आधुनिक चित्रकार पिकासो अफ्रीकी नीग्रो कला से प्रभावित थे। 1906 ई. में उनके द्वारा बनाया गया लेखिका गर्टुड स्टाइन का व्यक्तिचित्र आदिम संस्कृति के प्रभाव को स्पष्टतः उजागर करता है। पिकासो आदिम जन जीवन से इस हद तक प्रभावित थे कि उनके ब्लू पिरियड़ के चित्रों को आदिमकाल नाम दे दिया गया। विश्व प्रसिद्ध आविन्यों की स्त्रियाँ नामक चित्र में आदिम संस्कृति की झलक स्पष्टतः देखी जा सकती है।

ऐसा नहीं है कि यूरोप के चितेरे ही आदिवासी जनजातीय जीवन से प्रभावित होकर रचना करते थे। भारत में भी और विशेष तौर पर राजस्थान में इस परम्परा के चितेरे हुए हैं।

इन चित्रकारों में गोवर्धन जोशी बाबा का नाम आदर से लिया जाता है। गोवर्धन जोशी ने बंगाल स्कूल के प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस तथा अवनीन्द्र नाथ से शान्तिनिकेतन में रहकर कला शिक्षा ली थी।

1914 में जन्में गोवर्धन जोशी बाबा परम्परा से हटकर कुछ नया रचने की चेष्टा कर रहे थे। 1942 ई. में शान्ति निकेतन में प्रवेश लेने के बाद उन्होंने कलात्मक प्रयोगात्मक आधुनिक कला की बारीकियों का सूक्ष्म अन्वेषणपरक अध्ययन किया। इसके बाद बाबा ने प्रसिद्ध चित्रकार यामिनी राय की तरह लोक कला से प्रेरणा ग्रहण कर आदिम जीवन शैली को अपने चित्रों का विषय बनाया इनके चित्रों में भील जीवन के विभिन्न झाँकियाँ हैं। भील जीवन शैली के विविध पक्षों खेत खलिहान, नृत्य, वेश–भू आभूषण आदिवासी ग्रामीण जीवन के विभिन्न उत्सव और रीति–रिवाजों का जीवन्त चित्रण है बाबा भले ही अपने चित्रों में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते रहे परन्तु उनकी कला में इतनी विविधता हैं कि उनकी कृतियों को किसी एक विशेष वर्ग के अन्तर्गत

नहीं रखा जा सकता। उनके चित्रों में आकारों का सरलीकरण है भिन्न छटाओं वाले सुस्पष्ट क्षेत्रों की सुसंगत रचना का ठोस चित्रण है। टेम्परा व वाश पद्धति से सपाट गहरे रंग, चमकदार वर्ण संयोजन किया गया है। सरल आकारों में विषयवस्तु को जीवन्त किया गया है। इनके चित्रों की मोटी एवं गति व्यंजक रेखाएँ काले, भूरे गहरे हरे और सफेद रंगों की छटा आदिवासी ग्रामीण जीवन तथा वातावरण को वास्तविकता प्रदान करती हैं। बाबा की लय नामक चित्राकृतियों में केवल काली स्याही का प्रयोग आदिवासी ग्राम्य महिलाओं के रूपाकार का साक्षात्कार कराता है।

बाबा के चित्र विभिन्न भित्ति चित्रों के समान है। रंगों में समतलता, आकार का अलंकारित्व एवं गतिपूर्ण ऐठनदार व स्पष्ट रेखांकन आदि गुण उनके सहज प्रवृत्तियों पर निर्भर आदिम जीवन के प्रति आकर्षण का ही परिणाम था।

संदर्भ

1. राजस्थान भी सांस्कृतिक परम्परा, नीरज शर्मा, हि.ग्र.अ. जयपुर
2. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिया इतिहास, रिता प्रताप, हि.ग्र.अ. जयपुर
3. राजस्थान की समाजिक कला रा.ल.क.आ., आर.बी. गौतम
4. मेवाड़ की चित्रकला परम्परा, राधकृष्ण वशिष्ठ जयपुर 1984
5. भारतीय कला की कहानी, वि.सा. उपाध्याय, जयपुर 1996